'दार्शनिक दृष्टिकोन में 'सहिष्णूता' का संप्रत्यय'

डॉ. सुरेन्द्र गायधने
विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र विभाग,
रा.तु.म. नागपूर विश्वविद्यालय, नागपूर।

दार्शनिक समस्याओं के उद्भव का मुख्य स्त्रोत भाषाई अस्पष्टता रही है। अतः यह नितांत आवश्यक हो जाता है कि समस्या को प्रस्तुत करते समय समस्या का वास्तविक स्वरूप ज्ञात कर लें। क्योंकि जबतक समस्या का असली स्वरूप हम नही जान लेते, तबतक समस्या का उचित समाधान ढुंढना मुश्किल हो सकता है। समस्या को ठिक से समझने के लिए जिस भाषा में समस्या की प्रस्तुति होती है, उस भाषा के विभिन्न संप्रत्यय, प्रत्यय जो समस्या प्रस्तुति करते हुअे उपयोग में लाये जाते है, उन्हे ठिक से समझ लेना, उनका अर्थ और व्यवहार ज्ञात करना आवश्यक है। बीसवी शताब्दि में दार्शनिक क्षेत्र में भाषा-विश्लेषण का आगमन इसी हेतु हुआ।

भाषाई अस्पष्टता के कारण कई एक समस्याओंका जन्म होता है। भिन्न भिन्न व्यक्तियों में, समाजों में, राष्ट्रों में कईएक मतभेद/असहमती का कारण भी यही है। इन मतभेदों का प्रभाव निश्चिततः मनुष्य की कृतियोंपर होता है तथा फलस्वरूप मानव समाज का विकास कुंठित होने लगता है। सांप्रत, संपूर्ण जगत में 'सहिष्णूता' के विषय में चर्चाओं का दौर शुरू हो चुका है। किस कृती को सहिष्णूता का उदाहरण कहें? कौन गुट सहिष्णूता की अवहेलना कर रहा है? क्या सहिष्णूता का अंत हो चूका है? आदि प्रश्न हमारी दैनंदिन बातचीत का मुख्य विषय हो रहे है। परंतू सर्वप्रथम 'सहिष्णूता' क्या है, यह जानना अत्याधिक आवश्यक है, इन सभी प्रश्नोंपर चर्चा करने के पूर्व । प्रस्तूत आलेख में हम 'सहिष्णूता' के संप्रत्यय को विश्लेषित कर उसका अर्थ और स्वरूप समझने का प्रयास करेंगे।

वर्तमान में कई महानुभाव 'सहिष्णूता' के लिए अंग्रेजी में 'Tolerence' इस शब्द का प्रयोग कर रहे है। परंतू क्या हम 'सहिष्णूता' का अंग्रेजी अनुवाद इस भांती कर सकते है? क्या यह उचित अनुवाद कहलायेगा? 'Tolerence' का करीबी शब्द 'to tolerate' है, जिसका अर्थ होता है - अनदेखी करना, ध्यान न देना। अतः 'Tolerence' का अर्थ होगा - 'अनदेखी'।

मेरे विचार से 'सहिष्णूता' भाव अनदेखी के भाव से पूर्णतः भिन्न है। हर्बट बटरफिल्ड का मत यहां महत्वपूर्ण हो जाता है। उनके अनुसार अनदेखी में एक प्रकार का अनादर का भाव होता है। "Toleration implies a certain disrespect. I tolerate your absurb belief and your foolish acts, though I know them to be absurb and foolish." जॉन ग्रे के अनुसार जब कोई व्यक्ति किसी कृति/कर्म को tolerate करता है, तब उस कर्म को हम अवांछनिय असत्य और निम्नस्तर का समझते है। सहिष्णूता में यह सभी नकारात्मक भाव नही होते।

अंग्रेजी भाषा का शब्द 'Tolerence' को कभी कभी 'सहनशीलता' कहा जाता है। यदि यह अनुवाद स्वीकार कर ले तो 'सहिष्णूता' और 'सहनशीलता' समानार्थी हो जायेंगे। परंतू दार्शनिक दृष्टीसे यह एक तकलीफदेय समानार्थकता से ज्यादह नही होगा। 'सहनशीलता' में कुछ सह लेने का भाव होता है, जो सहिष्णूता में कदापि नही होता। किसी कर्म, वस्तू या अनुभव को हम उसी समय सहनशीलता का विषय मानते है, जब वह हमारी रूचि या अभिरूचि का ना हो। सहनशीलता बेमन से की जाने वाली कृती होती है। इन विषयों के प्रति हमारी भावनाएं नकारात्मक होती है। मनुष्य

जिन्हे अच्छा समझता है वे सभी वस्तुअें सहनशीलता के विषय नही हो सकते। प्रेम, प्यार, ममता, मैत्री, कला, देशभक्ती, आदि के प्रति सहनशील होना विरोधाभास का लक्षण ही होगा, किंतु, दुःख, पीडा, भेदभाव, गरीबी, विषमता, क्रोध, दबाव, धमकी, आदि अरूची के विषय सहनशीलता के विषय होते है। सहिष्णूता के संप्रत्यय में ऐसे अरूची के, अनादर के और दुःख के विषय नही होते।

<u>सहिष्णूता, सहनशीलता और अनदेखी</u> –

१) सहनशीलता और अनदेखी दोनो का स्वरूप नकारात्मक होता है। मात्र, सहिष्णूता किसी भी दृष्टीकोन से नकारात्मक नही है।

२) सहनशीलता और अनदेखी में कभी आदर का भाव उपस्थित नही होता। बल्कि, उसमें एक विशेष प्रकार का अनादर ही होता है। यह संभव है कि कभी-कभी हम जिस किसी विषय के प्रति मन में सहनशीलता लिए होते है, उनके प्रति आदर भी दर्शाते है। परंतू आदर को अभिव्यक्त करने वाली कृती एक अभिनय मात्र होती है, वास्तविकता नही। सहिष्णूता के संदर्भ में ऐसा अभिनय नही होता। सहिष्णूता में उच्च कोटि का आदर पल्लवित होता है।

३) सहनशीलता और अनदेखी में विरोध होता है। यह विरोध कई उदाहरणोंमें हमारी कृतियों के माध्यम से उजागर भी होता है। सहिष्णूता में दो भिन्न व्यक्ती या समदायोंमें भिन्नता होती है, लेकीन विरोध नही होता।

४) यदि नैतिक मुल्य व्यवस्था के परिप्रेक्ष में देखा जाए तो सहनशीलता और अनदेखी की क्रियोंसे किसी प्रकार का नैतिक मुल्य आविष्कृत नही होता। परंतु, सहिष्णूता एक उच्च कोटि का नैतिक मुल्य है।

५) सहनशीलता और अनदेखी की क्रियाओं का कालांतर में जो भी परिणाम सामने आने की संभावना होती है, उसमें विद्रोह, युद्ध, अनाचार, किसी अन्य प्रकार की हिंसा, पीडन, द्वैष, तिरस्कार, आदि मनुष्यत्व के लिए हानीकारक कृतियां हो सकती है। परंतू सहिष्णूता का परिणाम सदैव मैत्री, प्रेम और आनंद ही होता है।

<u>सहिष्णूता की पूर्वशर्त</u> –

सहिष्णूता एक नैतिक मुल्य है और प्रत्येक व्यक्ती का यह कर्तव्य है कि वह अपने जीवनकाल में सहिष्णू बने रहे। लेकीन सहिष्णूता हमारे चिंतन का परिणाम होनी चाहिए। क्योंकि एक आडंबर के रूप में सहिष्णूता नुकसानदेह हो सकती है। यदि सामनेवाला पक्ष सहिष्णूता के लिए मन में सकारात्मकता को स्थान दे, तभी सहिष्णूता सकारात्मक और सुखद परिमाण प्रदान करेगी। अन्यथा, बिना सोचे समझे सहिष्णूता का प्रदर्शन हानीकारक हो सकता है।